पंचकाशी

शास्त्रों में अनेक 'काशी' का उल्लेख है जिसमें से पाँच प्रमुख हैं। वे इस प्रकार हैं–(1) वाराणसी अथवा काशी, (2) उत्तरकाशी, (3) गुप्तकाशी, (4) शिवकाशी और (5) तेन्काशी। इनमें से प्रथम काशी का वर्णन द्वादश ज्योतिर्लिङ्गवाले अध्याय में आ चुका है।

(2) उत्तरकाशी

उत्तरकाशी के लिये ऋषिकेश या मसूरी से बसें पर्याप्त रूप से मिलती हैं। यह स्थान मसूरी से गंगोत्तरी जानेवाले रास्ते के बीच में स्थित है।

उत्तरकाशी उत्तराखण्ड का प्रधान तीर्थस्थल है। यहाँ कालीकमलीवाले क्षेत्रों का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ अनेकों प्राचीन मन्दिर हैं, जिनमें विश्वनाथजी का मन्दिर तथा देवासुरसंग्राम के समय छूटी हुई शक्ति(मन्दिर के सामने का त्रिशूल) दर्शनीय हैं। एकादशरुद्र–मन्दिर भी बहुत सुन्दर है। विश्वनाथजी के मन्दिर के पास ही गोपेश्वर, परशुराम, दत्तात्रेय, भैरव, अन्नपूर्णा, रुद्रेश्वर और लक्षेश्वर के मन्दिर हैं। विश्वनाथ–मन्दिर के दक्षिण शिव–दुर्गा–मन्दिर है। इसके पूर्व जड़भरत का मन्दिर है।

उत्तरकाशी भागीरथी, असि और वरणा नदियों के मध्य में है। इसके पूर्व में वारणावत पर्वत पर विमलेश्वर महादेवका मन्दिर है। उत्तरकाशी की पञ्चक्रोशी परिक्रमा वरणासंगम पर स्नान करके विमलेश्वर को जल चढ़ाकर प्रारम्भ की जाती है। यहाँ जड़भरत का आश्रम है; उसके पास ब्रह्मकुण्ड है–जहाँ स्नान, तर्पण, पिण्डदानादि का विधान है। ब्रह्मकुण्ड में गङ्गाजी का जल प्राय: सदा रहता है; किंतु यहाँ के अन्य घाटों तथा कुण्डों से गङ्गाजी की धारा दूर चली गयी है।

(3) गुप्तकाशी

उत्तरकाशी से तीन मील दूर यहाँ डोडीताल से निकली असिगङ्गा भागीरथी में मिलती है। यहीं से एक मार्ग 'डोडीताल' जाता है। उत्तरकाशी से यह ताल 18 मील दूर है जो दो मील घेरे का है। वहाँ का मार्ग सुगम है। 'डोडीताल' बहुत मनोहर स्थान है।

असिगंगा–भागीरथी संगम से गुप्तकाशी–2.5 मील है। पूर्वकाल में यहाँ ऋषियों ने भगवान् शङ्कर की प्राप्ति के लिये तप किया था। राजा बलि के पुत्र बाणासुर की राजधानी शोणितपुर[1] इसके समीप ही है। मन्दाकिनी के उस पार सामने ऊषीमठ है। कहते है कि बाणासुर की कन्या ऊषा का भवन वहाँ था और वहीं ऊषा की सखी द्वारिका से अनिरुद्धजी को ले आयी थी। गुप्तकाशी में अर्द्धनारीश्वर शिव की नन्दी पर आरूढ़ सुन्दर मूर्त्ति है। काशी–विश्वनाथ की लिङ्ग–मूर्त्ति भी है और नन्दीश्वर तथा पार्वती की भी मूर्त्तियाँ उसी मन्दिर में हैं। एक कुण्ड में दो धाराएँ गिरती हैं।

---

1. बाणासुर की राजधानी गया–पटना के मध्य बिहार प्रान्त में बराबर पर्वत पर भी बतायी जाती है।

जिन्हें गङ्गा-यमुना कहते हैं। यात्री यहाँ स्नान करके गुप्तदान करते हैं। केदारनाथ के पण्डे यहीं मिलते हैं।

(4) शिवकाशी

आजकल मदुरा से शिवकाशीतक बसें आदि साधन उपलब्ध हैं। मदुरा जाने के लिये मद्रास (चेन्नई) से ट्रेन या बस मिलती है। मदुरा से 27 मील पर विरुधनगर स्टेशन है। वहाँ से एक लाइन त्रिवेन्द्रम्तक जाती है। इस लाइन पर विरुदुनगर से 16 मील दूर शिवकाशी स्टेशन है। यहाँ भगवान् श्रीकृष्ण का मन्दिर है। मन्दिर में चतुर्भुज श्रीकृष्ण-मूर्त्ति है। इधर के विद्वान् मानते हैं कि यहीं बाणासुर की राजधानी थी। बाणासुर की पुत्री ऊषा के साथ श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का विवाह यहीं हुआ था। यहाँ भगवान् शङ्कर का भी एक मन्दिर है। शिवकाशी की चर्चा क्षितिलिंग (जो भगवान् शिव की अष्टमूर्त्तियों में से एक है) के वर्णन में विस्तार से की गयी है।

(5) तेन्काशी

तेन्काशी मदुरा से लगभग 160 किलोमीटर दूर स्थित है। वहाँ ट्रेन या बस द्वारा पहुँचा जा सकता है।

कडयनल्लूर से 10 मील (विरुधनगर से 76 मील) पर तेन्काशी स्टेशन है। इसे दक्षिण-काशी कहते हैं; क्योंकि तेन् का अर्थ दक्षिण होता है।

स्टेशन से आधे मील पर काशी-विश्वनाथ का मन्दिर है। इस मन्दिर के गोपुर का मध्यभाग बिजली गिरने से टूट गया है। गोपुर के भीतर एक छोटे मण्डप में वीरभद्र, भैरव, कामदेव, रति, वेणुगोपाल, नटराज, शिव-ताण्डव, काली-ताण्डव तथा दो काली की सहचरियों की बहुत ही सुन्दर, ऊँची मूर्त्तियाँ हैं।

मन्दिर के भीतर काशी-विश्वनाथ लिङ्ग प्रतिष्ठित है। शिव-मन्दिर के पार्श्व में पार्वती-मन्दिर है। यह मन्दिर भी विशाल है। इसमें पार्वती की भव्य प्रतिमा है। मन्दिर में और अनेक देवताओं की मूर्त्तियाँ परिक्रमा में मिलती हैं।

(यह लेख गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के 'तीर्थांक' तथा 'शिवांक' पर आधारित है।

❀❀❀❀❀❀

न देवो विद्यते काष्ठे पाषाणे मृत्तिकासु च।
भावेषु विद्यते देवो मन्त्रसंयोगसंयुतः।।

(स्कन्दपुराण नागरखण्ड 168/16-17)

अर्थात् देवता न तो काठ (लकड़ी) में रहते हैं न पत्थर में और न मिट्टी में ही रहते हैं, भावना में ही देवता का वास है। भावयुक्त मन्त्र के संयोग से सर्वत्र देवता का सान्निध्य हो जाता है।